Journal of Social Issues and Development
Vol.01, Number-01, Issue (Sep-Dec 2022)

वैष्वीकरण का जनजातीय समुदायों पर प्रभाव :एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (उत्तराखण्ड के ऊधम सिंह नगर जनपद के सन्दर्भ में)

षोध–पत्र सारांष

दुनिया में 20वीं षताब्दी के अन्तिम दषक में वैष्वीकरण की वास्तविक संकल्पना सामने आयी। यह प्रत्येक समाज के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के विष्वव्यापी समायोजन की एक प्रकिया है। इसी संबंध में दुनिया को एक वैष्विक ग्राम से अभिहित किया जाने लगा है। भारत में सामाजिक परिवर्तन का एक नया क्षेत्र वैष्वीकरण की प्रकिया है, जिसे हमारे देष में सन् 1985 के बाद विषेश प्रोत्साहन मिलने लगा। षाब्दिक रूप से जब आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक स्तर पर विष्व के बहुत सारे देष एक–दूसरे से जुड़ने लगते हैं, तब इस प्रकिया को हम वैष्वीकरण कहते हैं। इसी प्रकिया का दूसरा नाम भूमण्डलीकरण है। वर्तमान भारतीय समाज वैष्वीकरण के युग में है। वर्तमान अवस्था में आधुनिक समाज के विकास में इलेक्ट्रॉनिक संचार–व्यवस्था की बड़ी भूमिका है। वैष्वीकरण का प्रभाव संचार–माध्यमों के विभिन्न साधनों (आकाषवाणी, दूरदर्षन, कम्प्यूटर व इंटरनेट, दूरभाश/मोबाईल फोन, समाचार–पत्र एवं पत्रिका और सिनेमा आदि) द्वारा किसी समाज पर पड़ता है। प्रस्तुत षोध–पत्र में ऊधम सिंह नगर जनपद में अवस्थित थारू एवं बुक्सा जनजाति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर वैष्वीकरण के प्रभाव का एक समाजषास्त्रीय अध्ययन किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन में समग्र से प्रतिनिधि इकाइयों के चयन हेतु निदर्षन विधि के उपयोग को अनिवार्य माना गया है। इसलिए उद्देष्यपूर्ण निदर्षन पद्धति के द्वारा अनुसंधान में 272 चयनित उत्तरदाताओं को निदर्ष इकाइयों के रूप में चुनकर अध्ययन किया गया, जो समग्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। अध्ययन में तथ्य संकलन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों ही स्रोतों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन से प्राप्त तथ्यों के आधार पर उल्लेख किया जा सकता है कि थारू एवं बुक्सा जनजातियाँ उत्तराखंड की प्रसिद्ध आदिम जनजातियाँ हैं, जो कि अपने अनोखेपन के लिए जानी जाती हैं। थारू एवं बुक्सा जनजाति के लोगों का औद्योगीकरण, नगरीयकरण, आधुनिकीकरण, व वैष्वीकरण आदि प्रक्रियाओं के प्रभाव के कारण गाँव से षहरों की ओर पलायन बढ़ी है। अन्ततः यह निश्कर्श निकाला जा सकता है कि वर्तमान समय में वैष्वीकरण के प्रभाव से दोनों समुदायों के सामाजिक–संरचना में निष्चित

डॉ0 अंचलेश कुमार

रूप से परिवर्तन हो रहा है। परन्तु यह परिवर्तन सामान्यतः सीमित प्रकृति के हैं।

'असिस्टेन्ट प्रोफेसर–समाजशास्त्र विभाग, स0भ0सिंह राजकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रूद्रपुर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड।

वैष्वीकरण का जनजातीय समुदायों पर प्रभाव :एक समाजशास्त्रीय अध्ययन
(उत्तराखण्ड के ऊधम सिंह नगर जनपद के सन्दर्भ में)

डॉ0 अंचलेश कुमार '

प्रस्तावना

सामाजिक–आर्थिक संबंधों का सम्पूर्ण विष्व तक विस्तार वैश्वीकरण या भूमण्डीकरण है। वर्तमान समय में मानव जीवन के अनेक पक्ष, जिन समाज में हम रह रहे हैं, उससे हजारों मील दूर स्थित संगठनों और ताने–बाने से प्रभावित होने लगे हैं। इस प्रकार विष्व एक एकिक समाज–वयवस्था का रूप धारण करता जा रहा है। वैश्वीकरण (विष्व बाजार) के संबंध में चर्चा की आरम्भिक षुरूआत कार्ल मार्क्स एवं एंगेल्स की संयुक्त रचना "कम्युनिस्ट मैनोफेस्टो" से होती है। इसमें वैश्वीकरण को विष्व–बाजार के रूप में व्याख्या करके पूरी दुनिया में व्यक्तियों के मध्य अंतःसंबंध के आधार पर ऐकिक समाज–व्यवस्था की बात की गई है। भारतीय समाज में वैश्वीकरण का प्रभाव 1950 के दषक के आरम्भ में देखा गया था। जब समाजवादी समाज–व्यवस्था की स्थापना का संवैधानिक प्रयास किया गया। इस व्यवस्था का उद्देष्य जातिविहीन और वर्गविहीन आदि समाज की स्थापना करना था।

भारतीय समाज में वैश्वीकरण का प्रभाव मुख्यतः दो क्षेत्रों में देखने को मिलता है–आर्थिक तथा सामाजिक क्षेत्र। भारतीय संदर्भ में, वैश्वीकरण का सर्वाधिक प्रभाव आर्थिक क्षेत्र में हुआ है। इस क्षेत्र में यह प्रभाव 1990 के दषक के आरम्भिक वर्शों में परिलक्षित होता है, जब यहाँ आर्थिक सुधार की प्रकिया का दौर आरम्भ हुआ। वर्तमान भारतीय समाज में वैश्वीकरण का प्रभाव आर्थिक क्षेत्र के बाद सामाजिक क्षेत्र में भी दिखने लगा है, जिससे उत्तराखण्ड के ऊधम सिंह नगर जनपद में अवस्थित थारू एवं बुक्सा जनजाति भी अछूती नहीं है।

Journal of Social Issues and Development
Vol.01, Number-01, Issue (Sep-Dec 2022)

मुख्य शब्दः वैश्वीकरण, थारू एवं बुक्सा, जनजाति, उत्तराखण्ड, वर्तमान, भारतीय, समाज, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व समाजषास्त्रीय

'असिस्टेन्ट प्रोफेसर–समाजशास्त्र विभाग, स0भ0सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रूद्रपुर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड।

थारू एवं बुक्सा जनजाति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर वैष्वीकरण के प्रभाव को जानने के लिए अनुसंधित्सु ने उस क्षेत्र में एक लघु सर्वेक्षण के माध्यम से लोगों की समस्याओं और विचारों को सुनकर उसका समाजषास्त्रीय विष्लेशण किया। अनुसंधित्सु ने पाया कि इन जनजातियों के सामाजिक संरचना में परिवर्तन के लिए वैष्वीकरण का सर्वाधिक प्रभाव सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर पड़ा है। सर्वेक्षण के दौरान यह भी देखा गया कि इस जनजाति के लोग आर्थिक दृश्टि से अधिक पिछड़े नहीं हैं। वर्तमान समय में इन लोगों की आर्थिक स्थिति पहले की अपेक्षा आंषिक बेहतर हो रही है। बेहतर हो रही आर्थिक स्थिति के कारण ही परिवर्तन का प्रभाव सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर पड़ा है। वैष्वीकरण का थारू एवं बुक्सा जनजाति पर प्रभाव के कारण ही इन समुदायों की सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन बदलाव की ओर अग्रसर है। प्रस्तुत समाजषास्त्रीय अध्ययन वैष्वीकरण का दोनों समुदायों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन प्रभाव के कारण उनके बदलते हुए परिवेष को उजागर करने में महत्वपूर्ण मानी जा सकती है।

वैष्वीकरण से तात्पर्य किसी देष की अर्थव्यवस्था को षेश विष्व के साथ इस प्रकार जोड़े जाने से है कि उत्पति के साधनों–पूँजी, श्रम, उत्पादन की तकनीक, कच्चा माल आदि एवं उत्पादित वस्तुओं का आवागमन, राजनीतिक एवं भौगोलिक सीमाओं पर बिना किसी रोक–टोक के स्वतंत्र रूप से हो। इसका सामान्य अर्थ यह है कि किसी भी देष द्वारा इनमें से किसी भी के अर्न्तप्रवाह अथवा बर्हिगमन पर किसी भी प्रकार का कोई प्रतिबन्ध न हो। वैष्वीकरण ने भारत के स्थानीय समाज एवं संस्कृति को भी प्रभावित किया है। यहाँ की स्थानीय समाज एवं संस्कृति की कतिपय विषेशताएँ हैं। जब हम

वैष्वीकरण के प्रभाव को भारतीय समाज एवं संस्कृति पर देखते हैं, तब हमारा सन्दर्भ बहुलवादी समाज एवं संस्कृति से होता है। यही स्थानीय समाज एवं संस्कृति की पहचान है। वास्तव में, वैष्वीकरण की प्रक्रिया ने स्थानीयता को एक सीमा तक परिवर्तित किया है। यह भी एक तथ्य है कि आधुनिकीकरण और उत्तर–आधुनिकीकरण की अन्तःक्रिया जब स्थानीय संस्कृति के साथ होती है, तब वैष्वीकरण का मुकाबला स्थानीयकरण के साथ माना जाता है। जैसा कि विदित है कि इसका प्रभाव प्रत्येक समाज पर पड़ता है, लेकिन इसकी तीव्रता अलग–अलग होती है।

अध्ययन के उद्देष्य

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देष्य निम्नवत् हैं–

क. निदर्षितों की सामाजिक और सांस्कृतिक पृश्ठभूमि को ज्ञात करना।

ख. निदर्षितों की आर्थिक पृश्ठभूमि एवं पारिवारिक दषाओं आदि का अध्ययन करना।

ग. चयनित थारू एवं बुक्सा जनजाति की सामाजिक संरचना में परिवर्तन के लिए वैष्वीकरण की भूमिका को ज्ञात करना।

घ. संयुक्त परिवार व्यवस्था में हो रहे सामाजिक विघटन के लिए वैष्वीकरण को खतरे के रूप में परीक्षण करना।

ड़. थारू एवं बुक्सा जनजाति की जीवन षैली, विचारधारा व विष्वास आदि के क्षेत्र में वैष्वीकरण के प्रभाव का मूल्यांकन करना।

च. सामाजिक संस्थाओं में हो रहे परिवर्तन के लिए वैष्वीकरण (संचार–क्रांति का प्रभाव) के बढ़ते प्रभाव एवं लोकप्रियता का विष्लेशण करना।

अध्ययन पद्धतिषास्त्र

सामाजिक अनुसंधान आज के युग में दैनिक जीवन का एक अंग बन गया है, क्योंकि सामाजिक जीवन अत्यधिक जटिल होता जा रहा है। समाजषास्त्रीय अध्ययन भी सामाजिक अनुसंधान पर आधारित होता है, जिसमें अध्ययन क्षेत्र का चयन अति महत्वपूर्ण है, जो न तो अधिक सीमित और न ही अधिक विस्तृत होना चाहिए। इस अध्ययन का समग्र उत्तरखण्ड के तराई क्षेत्र में अवस्थित थारू एवं बुक्सा जनजाति समुदाय है। अनुसंधान में 272 चयनित उत्तरदाताओं को निदर्ष इकाइयों के रूप में चुनकर अध्ययन किया गया, जो

समग्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। अध्ययन में तथ्य संकलन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों ही स्रोतों का प्रयोग किया गया है।

प्राथमिक स्रोतों में साक्षात्कार–अनुसूची, अवलोकन व वैयक्तिक साक्षात्कार आदि तथा द्वितीयक स्रोतों में विभिन्न परियोजनाओं, समितियों व संस्थाओं के प्रतिवेदन, जनगणना रिपोर्ट, सरकारी आँकड़ों (प्रकाषित और अप्रकाषित), पुस्तकों, समाचार–पत्रों, शोध पत्रिकाओं एवं पत्रिकाओं आदि का आवष्यकतानुसार प्रयोग किया गया है। तथ्य एकत्रीकरण के बाद उनका वर्गीकरण, सारणीयन व विष्लेषण किया गया है। सबसे अंत में, अध्ययन के आधार पर यथार्थ निष्कर्ष व सामान्यीकरण का प्रतिपादन किया गया है, जो काफी सीमा तक समाजषास्त्रीय अध्ययन के अनुरूप ही सिद्ध हुये हैं।

अवधारणात्मक प्रारूप

वैष्वीकरण वर्तमान में परिवर्तन की एक प्रक्रिया है। समाजषास्त्र का समकालीन पड़ाव वैष्वीकरण का है।

वैष्वीकरण की प्रक्रिया का प्रारम्भ सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप में आधुनिकीकरण और उत्तर–आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के बाद हुआ। आधुनिकता का फैलाव वैष्वीकरण के कारण होता है। वैष्वीकरण ने ऐसी स्थितियाँ पैदा कर दी है जिससे अब व्यक्तियों में चेतना आ गई है कि उनके लिए अन्तःक्रियाएँ और सामाजिक संबंध संसार भर के साथ खुले हैं। समाजषास्त्रीय अध्ययन के सन्दर्भ में थारू एवं बुक्सा जनजाति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में परिवर्तन के लिए वैष्वीकरण महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। वैष्वीकरण का सम्बन्ध मुख्य रूप से आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन से जुड़ा है। इस परिवर्तन के अन्तर्गत संचार–क्रांति के माध्यम से अंतरसांस्कृतिक अंतःक्रियाओं को स्थानीय, क्षेत्रीय, राश्ट्रीय एवं अन्तर्राश्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा मिलता है। इसके परिणामस्वरूप जहाँ थारू एवं बुक्सा जनजाति की आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक स्थिति में बदलाव आ रहे हैं, वही नवीन वैयक्तिक मूल्यों की स्थापना भी हो रही है। प्रस्तुत अध्ययन उत्तराखंड के ऊधम सिंह नगर जनपद में अवस्थित थारू एवं बुक्सा जनजाति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर वैश्वीकरण के प्रभाव से संबंधित है। इन जनजातियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन संरचना में वैष्वीकरण के दौर के पूर्व भी परिवर्तन घटित हुए हैं (पूर्वगामी सर्वेक्षण के आधार पर), भले

ही उनकी गति अपेक्षतया धीमी रही है। अब जबकि वैष्वीकरण की तीव्र गति ने भारत की अर्थव्यवस्था पर व्यापक असर डालते हुए इसके विभिन्न स्वरूपात्मक संगठनों व सामाजिक संरचनाओं को तेजी से बदलने पर मजबूर कर दिया है। अतः चयनित थारू एवं बुक्सा जनजाति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में हो रहे परिवर्तनों की दिषा एवं गति का अध्ययन इस संबंध में रोचक एवं महत्वपूर्ण सम्भावनाओं के द्वार को खोल सकता है। वैष्वीकरण का जनजातीय समुदायों पर प्रभाव से संबंधित तथ्यों को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा और अधिक प्रदर्षित किया जा सकता है–

थारू एवं बुक्सा जनजाति के व्यक्तियों के सामाजिक जीवन में परिवर्तन का महत्व

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, और इस रूप में वह अच्छे जीवन व्यतीत करने की आकांक्षा रखता है। इसके लिए उसे विभिन्न प्रकार की आजीविका स्रोतों (पेषा) को भी अपनाना पड़ता है। चाहे वह पुरूश व महिला ही क्यों न हो। सभी को किसी–न–किसी प्रकार से अर्थोपार्जन करना पड़ता है। वर्तमान समय में प्रत्येक व्यक्ति को अच्छे जीवन व्यतीत करने की काफी इच्छा रहती है, इसके लिए उन्हें घर से बाहर जाकर नौकरी तक करना पड़ती है। इससे व्यक्तियों के सामाजिक जीवन में परिवर्तन का महत्व बढ़ जाता है।

इसलिए अधिकांष व्यक्ति मानते हैं कि उनके सामाजिक जीवन में परिवर्तन का महत्व है। थारू एवं बुक्सा जनजाति के सामाजिक जीवन में परिवर्तन महत्व के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं के दृष्टिकोणों को निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है–

तालिका सं0–1.1

क्या थारू एवं बुक्सा जनजाति के सामाजिक जीवन में परिवर्तन का महत्व है?

क्र0सं0	परिवर्तन का महत्व	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
01	हाँ	238	87ण्5
02	नहीं	34	12ण्5
03	योग	272	100.00

उपरोक्त तालिका से विदित होता है कि 87ण्5 प्रतिषत उत्तरदाता अपने सामाजिक जीवन में परिवर्तन के महत्व को स्वीकार करते हैं, और बताते हैं

कि आज के इस भूमंडलीकृत युग में व्यक्तियों को जागरूक होना जरुरी है। इसका कारण यह है कि बिना लोगों के जागरूक हुये परिवार रुपी गाड़ी आसानी से नहीं चल पाती है। जबकि दूसरी तरफ, मात्र 12.5 प्रतिषत उत्तरदाता मानते हैं कि थारू एवं बुक्सा जनजाति के व्यक्तियों के सामाजिक जीवन में परिवर्तन का महत्व नहीं है। वे सिर्फ अपने शौक तथा मजबूरीवष परिवर्तन को ग्रहण करते हैं।

परम्परागत सांस्कृतिक स्थिति में परिवर्तन

भारतीय समाज में थारू एवं बुक्सा जनजाति की स्थिति में जितना आरोह और अवरोह होता रहा है, सम्भवतः भारत के इतिहास में किसी दूसरे समाज में यह स्थिति देखने को नहीं मिलेगी। भारतीय संस्कृति अपने आप में महान है, जिसमें विष्व के विभिन्न संस्कृतियों की झलक यहाँ के सांस्कृतिक अजायबघर में देखने को मिलती है। भारतीय संस्कृति में सभी को सम्मान तथा बन्धुत्व भाव की दृष्टि से देखा जाता है। चाहे वह कोई भी हो। चूँकि संस्कृति सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं द्वारा संचालित होती है, चाहे वे प्रक्रियाएँ औपचारिक हो अथवा अनौपचारिक हो। अतः संस्कृति का अनिवार्य अंष उन ढाँचों में पाया जाता है, जो एक समूह की सामाजिक परम्पराओं व रीति–रिवाजों में निहित है। चूँकि मानव केवल अपने वातावरण तथा आनुवंषिकता की उपज है, अतः उसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि उसकी धारणाओं, मान्यताओं तथा दृष्टिकोणों व उसके जीवन के ढ़ाँचे के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

इस अनुसंधान में परम्परागत सांस्कृतिक स्थिति में परिवर्तन के प्रति उत्तरदाताओं के मनोवृत्ति को निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्षाया गया है–

तालिका सं0–1.2

परम्परागत सांस्कृतिक स्थिति में परिवर्तन के प्रति उत्तरदाताओं की मनोवृत्ति

क्र.सं.	मनोवृत्ति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
01	हाँ	131	48⁰16
02	नहीं	141	51⁰84
03	योग	272	100⁰00

उपरोक्त तालिका से विदित होता है कि 48ण्16 प्रतिषत उत्तरदाता विचार व्यक्त करते हैं कि उनके परम्परागत सांस्कृतिक स्थिति में परिवर्तन हुआ है। इसका कारण यह है कि अब समाज और परिवार की संस्कृति में बहुत कम परम्परा दिखती है। जैसे–विवाह में ही परम्परागत सांस्कृतिक झलक कम और आधुनिक झलक अधिक दिखती है। परम्परागत सांस्कृतिक कृत्यों की सिर्फ खानापूर्ति की जाती है। अतः परम्परागत सांस्कृतिक स्थिति में परिवर्तन निष्चित हुआ है। इसके विपरीत, 51ण्84 प्रतिषत उत्तरदाता मानते हैं कि परम्परागत सांस्कृतिक स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। इन उत्तरदाताओं के अनुसार, अभी भी समाज व परिवार में परम्परागत सांस्कृतिक स्थिति बरकरार है। संस्कृति में आधुनिकता के लक्षण का समावेष हो चुका है, लेकिन सांस्कृतिक स्थिति में परिवर्तन नहीं हुआ है। अभी भी परिवार के खान–पान, वेष–भूषा व रहन–सहन के स्तर में संस्कृति के परम्परागत कियाकलापों को देखा जा सकता है।

परिवार की वर्तमान आर्थिक स्थिति

किसी भी सामाजिक परिवेष में आर्थिक स्थिति का सीधा सम्बन्ध मानव के जीवन व्यतीत के लिए आवष्यक साधनों से होता है। परिवार का समस्त पहलू आर्थिक स्थिति से संबन्धित माना जाता है। परिवार की आर्थिक स्थिति से आय तथा व्यय आदि का आकलन होता है। यही कारण है कि समाज के आर्थिक ढाँचे में परिवर्तन के साथ–साथ सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन होते हैं। कार्ल मार्क्स का कथन है कि 'आदमी जिन्दा रहेगा, फिर कहीं वह इतिहास या समाज का निर्माण कर सकेगा और जिन्दा रहने के लिये उसे भोजन, कपड़ा व मकान की आवश्यकता होगी।' वर्तमान समय में अर्थव्यवस्था में मजबूती के कारण चयनित थारू एवं बुक्सा जनजाति की आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार हुए हैं। नए–नए सेवा के अवसरों के प्राप्त होने के कारण अब चयनित उत्तरदाता आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होते जा रहे हैं। जिनके कारण परिवार तथा समाज में उनकी स्थिति ऊँची हो रही है। ऊधम सिंह नगर जनपद के चयनित थारू एवं बुक्सा जनजाति के उत्तरदाताओं के परिवार की वर्तमान आर्थिक स्थिति के बारे में पता लगाने की कोषिष की गई, तो उसके भिन्न–भिन्न प्रत्युत्तर आए जो निम्नलिखित तालिका द्वारा स्पष्ट है–

तालिका सं0–1.3

उत्तरदाताओं के परिवार की वर्तमान आर्थिक स्थिति

क्र0सं0	वर्तमान आर्थिक स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
01	अच्छा	51	18⁰75
02	पहले की अपेक्षा बेहतर	75	27⁰57
03	साधारण	122	44⁰86
04	निम्न अथवा दयनीय	24	8⁰82
05	योग	272	100

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि 18⁰75 प्रतिषत उत्तरदाताओं के परिवार की वर्तमान आर्थिक स्थिति अच्छी है, जबकि 27⁰57 प्रतिषत चयनित थारू एवं बुक्सा जनजाति के उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति पहले की अपेक्षा आंषिक बेहतर है। इसके पश्चात् 44⁰86 प्रतिषत उत्तरदाताओं के परिवार की आर्थिक स्थिति साधारण है। सबसे कम 8⁰82 प्रतिषत उत्तदाताओं की आर्थिक स्थिति निम्न अथवा दयनीय है। तथ्यों के अवलोकन के पश्चात् यह स्पष्ट होता है कि ऐसे उत्तरदाताओं की संख्या सर्वाधिक है, जिनकी आर्थिक स्थिति पहले की अपेक्षा आंषिक बेहतर है। इसका कारण यह है कि पूर्व के आय की तुलना में वर्तमान आय अधिक है। आर्थिक स्थिति उसी व्यक्ति की बेहतर होती है, जिसके आय और व्यय का संतुलन बना रहता है। अच्छा और साधारण आर्थिक स्थिति वाले भी उत्तरदाता काफी हैं, जिनके आजीविका के प्रमुख स्रोत तथा आय के स्तर में काफी अन्तर नहीं है। निम्न अथवा दयनीय आर्थिक स्थिति वाले भी उत्तरदाता हैं, लेकिन इनकी संख्या आंषिक है।

परिवार का आकार

वर्तमान समय में परिवार का आकार अर्थात् सदस्य संख्या घटती जा रही है। अब सीमित परिवार की ओर लोगों का झुकाव बढ़ता जा रहा है। परिवार नियोजन से संबंधित विभिन्न विधियों के प्रयोग ने भी कुछ हद तक परिवारों की सदस्य संख्या को घटाने में योगदान दिया है। चयनित थारू एवं बुक्सा जनजाति के उत्तरदाताओं की श्रेणी में अधिकतर उत्तरदाता अपने परिवार का आकार छोटा रखने के पक्ष में ही दिखाई देते हैं। उत्तरदाताओं के परिवार के आकार को निम्नलिखित तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–

तालिका सं0–1.4

उत्तरदाताओं के परिवार का आकार

क्र.सं.	परिवार का आकार	उत्तरादाताओं की संख्या	प्रतिशत
01	बड़ा (07 सदस्यों से अधिक)	15	5ण्51
02	मध्यम (05–07 सदस्यों वाला)	201	73ण्90
03	छोटा (01–04 सदस्यों वाला)	56	20ण्59
04	योग	272	100ण्00

तालिका सं0–1.4 से ज्ञात होता है कि 5ण्51 प्रतिषत उत्तरदाता बड़े परिवारों से सम्बद्ध हैं। इन परिवारों की सदस्य संख्या 07 से अधिक है। 05–07 सदस्यों वाले परिवार के आकार को मध्यम माना गया है, तथा ऐसे परिवारों का प्रतिषत 73ण्90 है। तथा 01–04 सदस्यों वाले छोटे परिवारों का प्रतिषत 20ण्59 है, जो सर्वाधिक प्रतिषत वाला परिवार है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि इस अध्ययन में अब अधिकांष परिवार छोटे एवं मध्यम (कुल 94ण्49 प्रतिषत) आकार के हैं। बड़े परिवार मात्र 5ण्51 प्रतिषत ही है।

वैष्वीकरण के प्रभाव से सामाजिक–संरचना में परिवर्तन

सामाजिक संरचना समाज की विभिन्न इकाइयों, समूहों, संस्थाओं, समितियों व सामाजिक संबंधों से निर्मित एक प्रतिमानित एवं कमबद्ध ढाँचा है। सामाजिक संरचना अपेक्षा तथा एक स्थिर अवधारणा है, जिसमें अपवाद रूप में ही परिवर्तन होते हैं। सामाजिक संरचना परस्पर संबधित संस्थाओं, एजेन्सियों और सामाजिक प्रतिमानों तथा साथ ही समूह में प्रत्येक सदस्य द्वारा ग्रहण किये गये पादों तथा कार्यों की विषिश्ट कमबद्धता को कहते हैं। मैकाइवर तथा पैज के अनुसार, ''समूह निर्माण के विभिन्न तरीके संयुक्त रूप में सामाजिक संरचना के जटिल प्रतिमान का निर्माण करते हैं।'' संरचना का तात्पर्य सामाजिक इकाइयों के तुलनात्मक स्थिर एवं प्रतिमानित संबंधों से है। सामाजिक संरचना के अंग या भाग मनुश्य ही है, और स्वयं संरचना द्वारा परिभाशित और नियंत्रित संबंधों में लगे हुए व्यक्तियों की एक कमबद्धता है। जैसा कि विदित है कि उत्तराखण्ड के ऊधम सिंह नगर जनपद में अवस्थित थारू एवं बुक्सा जनजाति भी सामाजिक संरचना के आधार पर बँधी हुई है और सभी मानवीय कर्तव्यों को पूरा करते हुए जीवनयापन कर रही है। वर्तमान समय में थारू एवं बुक्सा समुदाय की सामाजिक संरचना में परिवर्तन से सम्बन्धित उत्तरदाताओं की मनोवृत्ति को निम्नलिखित तालिका द्वारा स्पश्ट किया जा सकता है–

<u>तालिका संख्या–1.5</u>

वैष्वीकरण के प्रभाव से सामाजिक–संरचना में परिवर्तन

क्र.सं.	परिवर्तन के प्रति मनोवृत्ति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
01	हाँ	211	77ण्56
02	नहीं	61	22ण्42
03	योग	272	100.00

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि वैष्वीकरण के प्रभाव से सामाजिक संरचना में परिवर्तन को 77ण्56 प्रतिषत उत्तरदाता अपना जवाब हाँ कहकर देते हैं। ये सभी स्वीकार करते हैं कि सामाजिक संरचना में वैष्वीकरण में अपना प्रभाव दिया है, और सामाजिक ढाँचा बदलने को मजबूर हैं। हाँ में उत्तर देने वाले उत्तरदाताओं का कहना है कि सामाजिक संरचना में परिवर्तन के प्रमुख कारणों में वैष्वीकरण के प्रभाव, आर्थिक स्थिति का बेहतर होना, षिक्षा का महत्व बढ़ना, सामाजिक–सांस्कृतिक स्थिति का उन्नत होना आदि है। इसके पष्चात् 22ण्42 प्रतिषत उत्तरदाता अपना जवाब 'नहीं' में देते हैं। इनका मानना है कि वैष्वीकरण के प्रभाव से सामाजिक संरचना में कोई परिवर्तन नहीं आया है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है और यह स्वतः चलता रहता है।

निष्कर्ष

वर्तमान अध्ययन वैष्वीकरण का थारू एवं बुक्सा जनजाति पर प्रभाव से संबन्धित है, जो उत्तराखण्ड के ऊधम सिंह नगर जनपद के थारू एवं बुक्सा समुदाय की परिवर्तनषील सामाजिक–संरचना के समाजषास्त्रीय अध्ययन का एक अनुभवात्मक विष्लेशण है। अध्ययन का उद्देष्य यह ज्ञात करना रहा है कि परम्परागत सामाजिक संगठन में वैष्वीकरण जैसी परिवर्तन की प्रक्रिया का प्रभाव किस सीमा तक पड़ा है। वैष्वीकरण वर्तमान में परिवर्तन की एक प्रक्रिया है और समाजषास्त्र का समकालीन पड़ाव वैष्वीकरण है। वैष्वीकरण की प्रक्रिया का प्रारम्भ सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप में आधुनिकीकरण और उत्तर–आधुनिकीकरण के बाद हुआ है। वैष्वीकरण वस्तुतः विभिन्न व्यक्तियों, क्षेत्रों और देषों की अन्तःनिर्भरता है। हमारे देष में आधुनिकता के

विकास में वैष्वीकरण की प्रासंगिकता हाल के वर्शों में बहुत अधिक बढ़ गई है।

वर्तमान भारतीय समाज वैष्वीकरण के युग में है। सामाजिक जीवन के अनेक पक्षों में स्थानीय और वैष्वीय लोग एक कड़ी में बंध रहे हैं और इसके साथ ही आवागमन के साधन सुलभ हुए हैं। वर्तमान अवस्था में आधुनिक समाज के विकास में संचार–माध्यमों के विभिन्न साधनों की बड़ी भूमिका है। इस भूमिका के प्रभाव के कारण ही पूरा विष्व एक ''वैष्विक गाँव'' बनने की ओर अग्रसर है। भारतीय सन्दर्भ में, वैष्वीकरण ने यहाँ की अर्थव्यवस्था के साथ स्थानीय समाज एवं संस्कृति को भी प्रभावित किया है।

Journal of Social Issues and Development
Vol.01, Number-01, Issue (Sep-Dec 2022)

संदर्भ ग्रन्थ सूचीरू ;त्मिमितमदबमेद्धरू

ठपेीजए ठण्ैण ;1993द्धरू जींतने श्रंदरंजप डमपद ैउंरपा ैदहजींद ।म ैूतववचरू ज्ंजीं न्दां ।तजीपा श्रममअंद चमत च्तांईींअष्डंदंअए टवसण्21 छवण्2ए म्दजीवहतंचीपब ंदक थ्वसा ब्नसजनतम ैवबपमजलए स्नबादवूण

क्मअए भ्ण ;1932द्धरू ष्ठपतजी ब्नेजवउे ।उवदहेज जींतने ;ळवतंीचनतद्धए डंद पद प्दकपंए टवस.12एछवण्2.3ए;ब्वउइपदमकद्ध ब्ंजीवसपब च्तमेए त्ंदबीपण

ळववकमए ॅण्श्रण ंदक भ्ंजजए च्ण्ज्ञण ;1981द्धरू डमजीवके पद ैवबपंस त्मेमंतबीए डब.ळतवू भ्पससए प्दजमतदंजपवदंस ठववो ब्वउचंदलए ।नबासंदकण

ळपककमदेए ।ण ;1990द्धरू जीम ब्वदेमुनमदबमे वि डवकमतदपजलए ब्ंउइतपकहमए च्वसपजल च्तमेए ब्ंउइतपकहमण

भ्ेदंपदए छंकममउण ;1999द्धरू ज्तपइंस प्दकपंए च्ंसां च्तोंदए क्मसीपण

श्रंपदए ळवचंस स्ंसण ;1998द्धरू त्मेमंतबी डमजीवकवसवहल ;डमजीवकेए ज्वससे ंदक ज्मबीदपुनमेद्धए डंदहंस क्ममच च्नइसपबंजपवदेए श्रंपचनतण

ज्ञवबींतए टण ज्ञण ;1963द्धरू ष्ैप्रम ंदक ब्वउचवेपजपवदे वि थ्ंउपससपमे पद जींतन टपससंहमष् टंदलरंजपए टवसण प्प्ए छ0ण्3 ।कपउरंजप ैमूां ैदहीए क्मसीपण

ज्ञनउंतए ।दबींसमी ;2008द्धरू टंपेींअपांतंद म्अंउ च्ंतपअंत टलंअेंजीं.
टपेंजींचपज च्ंतपअंतवद ।म ैदकंतइी डमपदए डवीपज च्नइसपबंजपवदेए क्ंतलं हंदरए
छमू क्मसीपण

डंरनउकंतए क्ण्छण ;1942द्धरू ष्जीम जींतने ंदक जीमपत ठसववक ळतवनचेष् श्रवनतदंस वि जीम त्वलंस ।ेपंजपब ैवबपमजल वि ठमदहंसण टवसण्8ण्छवण्1ए ब्नसबनजजंण

व्वउमदए ज्ण्ज्ञण ;1995द्धरू ।दंजवउल वि ळसवइंसप्रंजपवदरू डवतम ॅ उवतंस ब्तपेपे जींद ॅ क्मअमसवचउमदज क्पसमउउंए डंपदेजतमंउए छमू क्मसीपए 9 क्मबमउइमतए 1995ण

त्वइमतजेवदए त्वसंदकण ;1992द्धरू ळसवइंसप्रंजपवदरू ैवबपंस जीमवतल ंदक ळसवइंस ब्नसजनतमए छमूइनतलए ब्।ण

त्ंदए च्ण्ैण ;2002द्धरू जींतन श्रंदरंजप डमपद ैूजीलं म्अंउ च्वींद ज्ञम ैउंरपां.ैदोतपजपा ।लंउए ।चतोंपज ैवकी.च्तांइंदकीए ज्ञनउंनद टपींूअपकलंसंलए छंपदपजंसण

ैदींलंदंए ।ण्त्ण;1998द्धरू ष्ज्तमदके वि क्मउवहतंचीपब बेंदहम पद जीम जींतनेष् पद भ्ैण्ैगमदंएमजण।य;मकेण् च्मतेचमबजपअम पद ज्तपइंस क्मअमसवचउमदजरू थ्वबने वद न्जजंत च्तांकमेीए ठींतंज ठववो ब्मदजतमएस्नबादवूण

डॉ0 अंचलेश कुमार

ैतंदए ।ण ;1983द्धरू ष्जींतने श्रंदरंजप ज्ञप ठीवरलम च्ंकंतजीरू म ।कीलंलंद पद डंदंअ म्जीदवहतंचीपब ंदक थ्वसा ब्नसजनतम ैवबपमजलए स्नबादवूण

ैपदहीए ल्वहमदकतं ;1974द्धरू डवकमतदप्रंजपवद व िप्दकपंद ज्तंकपजपवदए जीवउचेवद च्तमेे प्दकपं स्जकय छमू क्मसीपण

ैतपअेंजंअए ैण्ज्ञण ;1949द्धरू ष्वउम च्तवइसमउे व िब्नसजनतम ब्वदजंबज ।उवदह जीम जींतनेष् ऀजमतद ।दजीतवचवसवहपेजए म्जीदवहतंचीपब ंदक थ्वसा ब्नसजनतम ैवबपमजलए स्नबादवूण

ॅजमतेए डंसबवसउ ;1998द्धरू ळसवइंसप्रंजपवदए त्वनजमसकहमए स्वदकवदए 1998ण